डॉ. क्रेग कीनर, अधिनियम, व्याख्यान 18, अधिनियम 17

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह अधिनियम 17 पर सत्र 18 है।

हालाँकि पॉल को थिस्सलुनीके में शत्रुतापूर्ण प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ा, फिर भी उसने फिलिप्पी की तरह ही चर्च छोड़ दिया।

खैर, उम्मीद है कि चीजें उसके लिए बेहतर होंगी, लेकिन अभी तक नहीं। बेरिया में प्रतिक्रिया शुरू में अधिक सकारात्मक है, छंद 10 से 15। वाया इग्नाटिया, जिस पर वे 17:1 में यात्रा कर रहे थे, पश्चिम की ओर जारी रहा, लेकिन पॉल ने इसके बजाय ग्रीस के दक्षिण में अखाया के लिए एक सड़क ले ली, जो बेरिया से होकर जाती थी।

बेरिया थिस्सलुनीके और वाया इग्नाटिया से 60 मील पश्चिम में था, इसलिए वह अपने और उन लोगों के बीच कुछ दूरी रख रहा था जो उसे सताना चाहते थे। और यदि वे उसकी तलाश में जाते, तो संभवतः वे वाया इग्नाटिया पर उसकी तलाश करते। हालाँकि, यह बात एक शहर से दूसरे शहर तक फैल जाती है क्योंकि लोग हमेशा इन सड़कों पर यात्रा करते रहते हैं।

17:11, यहूदी धर्म उन लोगों को महान मानता था जो हर बात को धर्मग्रंथों के अनुसार जांचते थे और अच्छे शिक्षकों की बात ध्यान से सुनते थे। और निःसंदेह, हम भी ऐसा ही मानते हैं। यूनानी दार्शनिकों ने भी उन लोगों की प्रशंसा की जो सत्य को ध्यान से सुनते थे।

खैर, बेरिया के आराधनालय में, लोगों ने पॉल की बात सुनी और उन्होंने धर्मग्रंथों की खोज की। संभवतः उनके पास टोरा स्क्रॉल था, संभवतः ग्रीक अनुवाद में, और संभवतः भविष्यवक्ताओं के कुछ स्क्रॉल भी थे। उन्हें प्राप्त करना आसान नहीं था।

संभवत: सभी आराधनालयों में ये नहीं थे, लेकिन यदि हम फिलो और जोसीफस ने हमें जो बताया, उसके आधार पर हम इकट्ठा कर सकें तो उनमें से अधिकांश के पास था, भले ही इन्हें हाथ से कॉपी करना पड़ता था। और साथ ही, हमारे पास 17:12 में महिलाओं का विशेष उल्लेख है, जो 17:4 में ल्यूक की रुचियों के अनुरूप है। 17:13, थिस्सलुनिकियों का बेरिया में कोई कानूनी अधिकार क्षेत्र नहीं था।

सो ये थिस्सलुनीके यहूदी, जो सुनते हैं, कि पौलुस बिरीया के आराधनालय में बोल रहा है, वे यहां आकर बिरीया में भी उसके लिये उपद्रव खड़ा करते हैं। उनका कोई कानूनी अधिकार क्षेत्र नहीं था. भले ही वे अधिकारी हों, उनका कोई कानूनी अधिकार क्षेत्र नहीं होगा। वे थिस्सलुनीके से कोई आदेश नहीं ला सके, लेकिन भीड़ कानूनी रूप से काम नहीं करती। कुंआ,

17:14-15, दूत शायद ही कभी अकेले यात्रा करते थे। यात्री दूसरों के साथ अधिक सुरक्षित थे।

रास्ते में कुछ लोग पॉल के साथ गए और उन्होंने उसकी सुरक्षा के लिए उसे बाहर भेजा। वह दूसरों को पीछे छोड़ सकता था, लेकिन पॉल मुख्य लक्ष्य था। और ल्यूक ने इसे एक तरह से संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

हमें 1 थिस्सलुनीकियों 3:1 में कुछ और विवरण, कुछ भिन्न विवरण मिलते हैं। इसमें सामंजस्य बिठाने के कई तरीके हैं, लेकिन ल्यूक वास्तव में आपको हर विवरण देने में दिलचस्पी नहीं रखता है। ल्यूक सिर्फ संक्षेप में बता रहा है. पॉल अंत में एथेंस चला गया, जो काफी हद तक दक्षिण की ओर है।

लेकिन मैसेडोनिया के बाहर उसे उतनी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। और कोई भी इतनी दूर दक्षिण तक उसका पीछा नहीं करेगा। यह पूरी तरह से उनके प्रांत से बाहर है।

एथेंस में कुछ बंदरगाह थे। हो सकता है कि पॉल पीरियस में आ गया हो। हो सकता है वह किसी दूसरे बंदरगाह पर आ गया हो.

कम से कम इनमें से एक बंदरगाह में, जब वे केप का चक्कर लगा रहे थे, तो वह एक्रोपोलिस के शीर्ष पर पार्थेनन को देख सकता था। वह एथेना के भाले की नोक को पहले से ही समुद्र से अंदर आते हुए देख सकता था। जैसे ही वह अंदर आ रहा था, वह बंदरगाह पर एक अज्ञात देवता की वेदी भी देख सकता था।

इनमें से कई वेदियाँ अज्ञात देवताओं की थीं। और यदि आप पोसानियास पढ़ते हैं, तो पाउसानिया दूसरी शताब्दी का यूनानी भूगोलवेत्ता था, और वह हमें उन सभी मूर्तियों और सभी शहरों के बारे में बताता है जिन्हें आप देख सकते हैं। और निःसंदेह, कुछ चीज़ें पॉल के समय के बाद बनाई गईं।

लेकिन अगर आप ठीक-ठीक जानना चाहते हैं कि पॉल एथेंस के बाज़ार में क्या देख सकता था, और पॉल एक्रोपोलिस पर क्या देख सकता था, अगर वह एक्रोपोलिस पर जाता, तो जहाँ भी आप मुड़ते, वहाँ मूर्तियाँ होतीं। जिधर देखो उधर मन्दिर थे। तो, जब पॉल की आत्मा उसके भीतर उत्तेजित हो गई, तो मेरा मतलब है, यहां एथेंस में महान दर्शन के लिए यह प्रतिष्ठा थी, लेकिन जहां भी आप जाते थे, वहां इन देवताओं की पूजा होती थी।

और एथेंस जैसे कथित बौद्धिक स्थान में इस मूर्तिपूजा से पॉल अंदर से बहुत उत्तेजित हो गया था। मैं कथित तौर पर कहता हूं. अन्यजातियों ने सोचा कि यह एक बौद्धिक चीज़ थी, उनमें से कुछ, लेकिन यहूदी लोगों ने ऐसा नहीं किया।

उन्हें लगा कि यह बहुत बेवकूफी है. जब हम भगवान द्वारा बनाए गए हैं तो कोई लोगों द्वारा बनाई गई निर्जीव वस्तुओं की पूजा क्यों करेगा? तो, पद 16 में, उसकी आत्मा उसके भीतर उत्तेजित हो जाती है। यदि आप पोसानियास पढ़ते हैं, तो आप कोरिंथ इत्यादि के बारे में भी सभी प्रकार के विवरण प्राप्त कर सकते हैं।

इसलिए, यदि आप उन्हें चाहते हैं, तो पॉसनीस पढ़ें। आप एक द्वितीयक स्रोत पढ़ सकते हैं, लेकिन जब तक वे आपको कुछ पुरातात्विक साक्ष्य नहीं देते, जो अब भी उपलब्ध है, वे इसका अधिकांश भाग पौसानियास से लेने जा रहे हैं। दर्शन।

रोमन काल में, दार्शनिकों ने जिसे हम दर्शनशास्त्र कहते हैं, उसकी तुलना में नैतिकता पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। धर्म ने नैतिकता से उतना व्यवहार नहीं किया जितना दर्शनशास्त्र ने। धर्म की रुचि मुख्यतः कर्मकांड में अधिक थी।

बहुत से लोग सोचते थे कि दार्शनिक वास्तव में अधार्मिक थे। उनमें से कुछ, जैसे एपिक्यूरियन, धार्मिक अनुष्ठान के मामले में अधार्मिक थे, लेकिन कई दार्शनिकों ने देवताओं को अंधविश्वासी कहकर खारिज कर दिया, हालांकि उन्होंने कहा कि अगर जनता ऐसा करती है तो यह ठीक है। किसी भी स्थिति में उनमें से अधिकांश नास्तिक नहीं थे।

उनमें से कुछ थे, लेकिन उनका मानना था कि देवता मानव अस्तित्व से बहुत दूर हैं। एपिकुरियंस का यही मानना था, और असली देवता सूर्य, चंद्रमा इत्यादि जैसी चीज़ें ही थे। उन्हें अक्सर नास्तिक माना जाता था, लेकिन तकनीकी रूप से वे नास्तिक नहीं थे।

वे अधिक हद तक आस्तिक जैसे थे, लेकिन लोग नास्तिक कहकर उनकी आलोचना करते थे। लेकिन कई लोगों ने देवताओं को अंधविश्वास के रूप में त्याग दिया और अंधविश्वासों की पूजा की, लेकिन वे लोगों को अपने विचारों में परिवर्तित करने में सफल नहीं हुए। यह सिर्फ उनके विचार थे, और उन्होंने कहा, ठीक है, यह जनता के लिए उपयोगी है।

किसी प्रकार का धर्म रखना उन्हें एक पंक्ति में रखता है। यहाँ तक कि प्लेटो ने भी कहा था कि धर्म लोगों को एक पंक्ति में रखता है। प्लेटो ने कहा कि राज्य के समुचित कामकाज के लिए यह आवश्यक है, हालाँकि वह निजी पूजा को ख़त्म करना पसंद करते।

हालाँकि, कुछ दार्शनिकों ने धर्म पर अंधविश्वास के रूप में हमला किया। स्टोइक, जो इस काल में दर्शन का सबसे लोकप्रिय रूप थे, ने धर्म पर हमला नहीं किया। कभी-कभी उन्होंने देवताओं के अस्तित्व का बचाव भी किया, हालाँकि वे लोकप्रिय स्तर के अनुष्ठानों का अभ्यास नहीं करते थे।

रोमन लोग हमेशा दार्शनिकों पर भरोसा नहीं करते थे, हालाँकि ऐसा विशेष रूप से पहले के समय में था। अलंकारिकता और दर्शनशास्त्र के बीच भी एक युद्ध चल रहा था, लेकिन फिर से यह मुख्य रूप से पहले की अवधि में था और इस बिंदु पर उतना नहीं था। एथेंस में दर्शनशास्त्र का अत्यधिक सम्मान किया जाता था।

एथेंस प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध था और अभी भी महान शहरों पर व्याख्यान का विषय था। परंतु इसकी वास्तविक महिमा फीकी पड़ गई थी। इसकी ख्याति महान दार्शनिकों के रूप में थी।

आख़िर सुकरात वहीं से थे. लेकिन अब, वास्तविक दार्शनिक शिक्षा के मामले में, यह अलेक्जेंड्रिया और टार्सस, जो कि विश्वविद्यालय केंद्र भी थे, से भी पीछे रह गया था। आप इसे समझ सकते हैं.

आज कुछ स्थान ऐसे हैं जो अपनी विशिष्ट प्रतिष्ठा पर चलते हैं, लेकिन कुछ अन्य स्कूल भी हैं जिनकी प्रतिष्ठा कम विशिष्ट है, फिर भी वहां शिक्षा की गुणवत्ता काफी अच्छी है। किसी भी मामले में, अलेक्जेंड्रिया और टार्सस पहले ही विश्वविद्यालय केंद्रों के रूप में एथेंस से आगे निकल चुके थे। यह जानना भी दिलचस्प है कि एथेंस, थिस्सलुनीके की तरह, एक स्वतंत्र शहर था।

इसे पहचानना महत्वपूर्ण है क्योंकि कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, पॉल ने एथेंस में कभी प्रचार नहीं किया। उन्होंने 1 थिस्सलुनिकियों में एथेंस में होने का उल्लेख किया है, इसलिए कोई भी इससे इनकार नहीं करता है। लेकिन साथ ही, 1 कुरिन्थियों 16:15 में, पॉल कुरिन्थ में किसी को अखाया प्रांत के पहले फल के रूप में बोलता है।

और वे कहते हैं, ठीक है, एथेंस अखाया प्रांत में था, भले ही कोरिंथ इसकी राजधानी थी। यदि पहला धर्मपरिवर्तन एथेंस में नहीं था, तो भले ही पॉल ने एथेंस में प्रचार किया हो, उसने प्रेरितों 17:34 में जो आप देखते हैं, उसके विपरीत कोई धर्मपरिवर्तन नहीं किया। दुर्भाग्य से इस तर्क के लिए, एथेंस एक स्वतंत्र शहर था, और इसलिए, भले ही भौगोलिक रूप से यह अचिया का हिस्सा था, तकनीकी रूप से यह अचिया प्रांत का हिस्सा नहीं था। और इसलिए, पॉल को ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, आप जानते हैं, किसी और के अखाया के पहले फल के बारे में बोलना, भले ही पॉल स्पष्ट रूप से सबसे पहले धर्मान्तरित लोगों के बारे में बोल रहा हो, एथेंस में धर्मान्तरण से इंकार नहीं करता है।

और यह तर्क देने वाले अधिकांश लोगों ने इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया है कि एथेंस कुछ और शताब्दियों तक एक स्वतंत्र शहर था। दार्शनिकों के साथ रब्बी की बहस रब्बी साहित्य में दिखाई देती है, अक्सर यह दिखाने के एक तरीके के रूप में, आप जानते हैं, हम रब्बी इतने चतुर हैं कि हम दार्शनिकों को भी हरा सकते हैं। वह साहित्यिक समारोह था.

और इस कथा का कार्य समान हो सकता है, हालाँकि यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो किंवदंतियों पर आधारित या मनगढ़ंत जानकारी की तरह हो। यह पॉल के एक यात्रा साथी के प्राचीन इतिहासलेखन के कार्य में है, जिसमें वह उस चीज़ के बारे में लिख रहा है जो उसके समय की एक पीढ़ी के भीतर घटित हुई थी। भाषण लगभग एक चौथाई अधिनियमों का निर्माण कर सकते हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि आप इसे कैसे गिनते हैं, और अक्सर वे विश्वास की रक्षा करते हुए क्षमाप्रार्थी कार्य करते हैं।

और यहाँ भी यही स्थिति है. क्षमाप्रार्थी और दर्शन. ग्रीको-रोमन दुनिया में यहूदी धर्मशास्त्रियों ने पहले ही ग्रीक दर्शन के सबसे उपयोगी योगदान को लूट लिया था, और वे सदियों से ऐसा कर रहे थे।

उन्होंने वास्तव में दावा किया कि दार्शनिकों ने मूसा की साहित्यिक चोरी की थी, जो संभवतः सच नहीं है, लेकिन जस्टिन जैसे ईसाई धर्मशास्त्रियों ने इसका अनुसरण किया। और कुछ यूनानियों ने यह भी सोचा कि उनके कुछ दार्शनिक, जैसे पाइथागोरस, यहूदी धर्म से आए थे। हेलेनिस्टिक यहूदी अक्सर इब्राहीम को एक दार्शनिक के रूप में चित्रित करते थे।

उसे फिलो और चौथे मैकाबीज़ और अरिस्टियास के पूर्व-ईसाई पत्र में इस तरह चित्रित किया गया है । इसलिए, बहुत सारे यहूदी क्षमाप्रार्थी ने संलग्न दर्शन के साथ बातचीत की, विशेष रूप से इस अवधि तक स्टोइक दर्शन, लेकिन अलेक्जेंड्रिया में, बहुत सारे प्लेटोनिक दर्शन। तो, पॉल के पास पहले से ही इसमें कुछ प्रशिक्षण हो सकता है, और पॉल को निश्चित रूप से रास्ते में इसमें से कुछ को लेने और इसमें से कुछ का उपयोग करने का अवसर मिला है।

अब कभी-कभी, वह यह नहीं कहता कि दार्शनिकों ने इसे मूसा से चुराया है, लेकिन वह ओवरलैप देखने को तैयार है। आज कभी-कभी मुझे इतना गुस्सा आता है कि कुछ लोग फोन करते हैं, अगर आपको बाइबल की कुछ बातों पर संदेह है, तो वे आपको आलोचनात्मक विद्वान कहते हैं। यदि आप बाइबल में कुछ चीज़ों का बचाव कर रहे हैं, तो वे कहते हैं कि आप क्षमाप्रार्थी हैं, जैसे कि यह एक आलोचनात्मक विद्वान होने के अलावा कुछ और है।

क्षमा याचना, बचाव का मतलब है कि आप किसी पद का बचाव कर रहे हैं। और जो विद्वान किसी चीज़ पर संदेह करते हैं, वे एक स्थिति का बचाव कर रहे हैं, एक ऐसी स्थिति जो इसके प्रति संदेहपूर्ण है। यदि मैं किसी ऐसे पद का बचाव करता हूं जो उसके लिए अधिक सम्मानजनक है, तो मेरे पास ऐसा करने का अच्छा कारण है।

ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि मैंने अपना शोध नहीं किया है। मैं एक्ट्स के साथ उसी तरह व्यवहार कर रहा हूं जिस तरह मैं तुलनीय ग्रीको-रोमन साहित्य के साथ करता हूं। और जरूरी नहीं कि मैं उन सभी निष्कर्षों पर पहुंचूं जो हर अन्य रूढ़िवादी विद्वान करते हैं।

हम सभी एक-दूसरे के समान निष्कर्षों पर नहीं पहुंचते हैं, क्योंकि हम आलोचनात्मक विद्वान हैं। हम सबूतों को देखते हैं, देखते हैं कि यह किस ओर इशारा करता है। और संशयवादी हमेशा एक-दूसरे के समान निष्कर्ष पर नहीं पहुंचते हैं।

मैं इस बात से इनकार नहीं कर रहा हूं कि वे आलोचनात्मक विद्वान हो सकते हैं। मैं सिर्फ यह कह रहा हूं कि कभी-कभी लोगों के पास चर्चा को तैयार करने का एक तरीका होता है जो वास्तव में बहुत उचित नहीं होता है। तो, क्या मैं किसी पद का बचाव करूँ? हां, लेकिन केवल तभी जब मैंने अपना शोध किया और स्थिति पर निष्कर्ष पर पहुंचा।

और इसलिए, क्या मैं क्षमाप्रार्थी हूँ? हाँ, लेकिन कई संशयवादी विद्वान और अपनी स्थिति के लिए क्षमाप्रार्थी भी हैं। तो, मैं बस एक अच्छा विद्वान और साथ ही एक अच्छा ईसाई बनने की कोशिश कर रहा हूं, लेकिन मैं उन्हें संघर्ष में नहीं देखता हूं। मैं अपने धर्म परिवर्तन से पहले नास्तिक था, और जो सबूत मैंने देखा है, उसने मुझे हमेशा ईश्वर की ओर अधिक इशारा किया है, ईश्वर से दूर नहीं।

किसी भी स्थिति में, अध्याय 17 और पद 18। विदेशी देवताओं की पूजा शुरू करने का खतरा था, जैसा कि यहां पॉल के बारे में कहा गया है। मेरा मतलब है, अध्याय 16 श्लोक 20 और 21 में पहले से ही कहा गया है कि वह यहूदी रीति-रिवाजों की घोषणा कर रहा है जो रोमन रीति-रिवाजों में फिट नहीं बैठते हैं।

अध्याय 17 और श्लोक 7 में सीज़र के अलावा किसी अन्य राजा के बारे में बोलने का आरोप लगाया गया। खैर, यहां 1718 में, लोग उन पर विदेशी देवताओं की पूजा शुरू करने का आरोप लगा रहे हैं, हालांकि यहां शिक्षित दार्शनिक हैं जो जीवंत चर्चा में लगे हुए हैं। यह अभी तक इतना कानूनी आरोप नहीं है, लेकिन यह संभावित रूप से खतरनाक आरोप था। जोसेफस के अनुसार, 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में, एथेंस में एक पुजारिन को इस तरह के आरोप के लिए पत्थर मारकर मार डाला गया था।

लेकिन यह विशेष रूप से सुकरात की ओर संकेत है। सुकरात पर मुख्य आरोप यह था कि वह नये विदेशी देवताओं का प्रचार कर रहा था। आप इसे प्राचीन साहित्य में हर जगह पाते हैं।

और फिर सुकरात को एथेंस की अग्रणी परिषद के सामने ले जाया गया, जो कि एरियोपगस था, जिसके सामने पॉल को अगले पद में ले जाया जाने वाला है। तो, ल्यूक पॉल को एक नए सुकरात की तरह चित्रित कर सकता है। तुम्हें पता है, एथेंस, तुमने सुकरात की बात नहीं मानी।

बेहतर होगा कि आप इसे सुनें। जैसे पॉल जा रहा है, आम तौर पर अधिनियम उसे भविष्यवक्ताओं के अधीन बोलने वाले और यीशु के नक्शेकदम पर चलने वाले के रूप में चित्रित करता है, जो भविष्यवक्ताओं में सर्वोच्च था। तो, यह विशेष रूप से सुकरात की ओर संकेत है।

और हो सकता है कि ल्यूक इन दार्शनिकों के खर्च पर कुछ मज़ा कर रहा हो, जैसे उसने अधिनियमों के अध्याय 12 में चर्च के खर्च पर किया था। आपके पास एक प्रकार का चुटकुला है जो इन दार्शनिकों की बुद्धिमत्ता या समझदारी का मज़ाक उड़ाता है और यह कहाँ मायने रखता है , भगवान के बारे में सच्चाई, जहां यह सबसे ज्यादा मायने रखती है, मुझे कहना चाहिए। क्योंकि वे कहते हैं कि यह आदमी वीर्यवान है ।

यह एक शब्द था, इसका शाब्दिक अर्थ था वे पक्षी जो बाज़ार के चारों ओर अनाज चुगते होंगे। लेकिन इसे उन पुरुषों पर लागू किया जाने लगा जो बाजार में बाधाओं को उठाते थे। और अंततः, इसे लागू किया गया, जैसा कि लेक और कैडबरी ने बहुत समय पहले बताया था, अंततः, इसे बेकार लोगों पर लागू किया गया।

जो लोग वास्तव में कुछ भी नहीं जानते थे, लेकिन ऐसा लगता था जैसे वे कुछ जानते थे क्योंकि वे इसे उद्धृत कर सकते थे और वे उसे उद्धृत कर सकते थे। आप जानते हैं, पॉल के पास दार्शनिकों के ज्ञान, उद्धरण, ज्ञान की वह सीमा नहीं है जो वे अपने-अपने स्कूलों में रख सकते हैं। एक-दूसरे की आलोचनाओं को छोड़कर, स्टोइक्स को एपिकुरियंस के बारे में और इसके विपरीत के बारे में बहुत कुछ नहीं पता होगा।

लेकिन किसी भी मामले में, उनमें से कुछ का कहना है कि यह एक शुक्राणु है और वह विदेशी देवताओं का परिचय दे रहा है। खैर, पॉल के दर्शकों में एपिक्यूरियन और स्टोइक दोनों के लोग शामिल हैं, इस समय वह बाज़ार के भीतर बातचीत कर रहा है। और विदेशी देवताओं को पेश करने का यह विचार, ध्यान दें कि वे बहुवचन का उपयोग करते हैं।

क्योंकि पॉल उन्हें उपदेश दे रहा है, ल्यूक कहते हैं, यीशु और अनास्तासिस। अनास्तासिस का अर्थ है पुनरुत्थान, लेकिन ग्रीक में यह एक महिला का नाम भी था। तो, आह, ठीक है, वह इन लोगों में से एक है, वह पुरुष देवताओं को एक में मिला रहा है और महिला देवताओं को दूसरे में मिला रहा है।

वे समझ नहीं पा रहे हैं कि पॉल क्या कह रहा है। भले ही वह उनके लिए प्रासंगिकता बनाने की कोशिश कर रहा है। और इसलिए, वे धर्मप्रचार करने के इच्छुक हैं, और फिर भी वे मुद्दे से चूक जाते हैं।

और आज हमारे पास ऐसा करने वाले बहुत से लोग हैं, जो ईसाई धर्म या वास्तविक ईसाई धर्म को भी नहीं समझते हैं। वे सुसमाचार को नहीं समझते हैं, वे बाइबिल के पाठ को नहीं समझते हैं, लेकिन वे इसका मज़ाक उड़ाने को तैयार हैं। लेकिन संभवतः हर कोई पॉल का समान रूप से मज़ाक नहीं उड़ा रहा है।

हो सकता है कुछ लोग उनकी बात ज्यादा सुन रहे हों। पॉल अपने श्रोताओं के बीच विभाजन और विजय प्राप्त करने जा रहा है, ठीक उसी तरह जैसे वह अधिनियम 23.6 में फरीसियों और सदूकियों के साथ करता है। और वह फरीसियों को पकड़ लेता है, आप जानते हैं, ठीक है, इस आदमी के साथ कुछ भी गलत नहीं है, वह सिर्फ पुनरुत्थान का प्रचार कर रहा है।

और यदि किसी स्वर्गदूत या आत्मा ने उस से बात की हो तो क्या होगा? मेरा मतलब है, हम यह विश्वास नहीं कर सकते हैं कि यीशु मृतकों में से जी उठे थे, लेकिन हम यह विश्वास कर सकते हैं कि वह अब एक देवदूत या आत्मा हैं और उन्होंने उनसे पुनरुत्थान के बारे में बात की थी। और इसलिए, फरीसी और सदूकी वहां जाते हैं। खैर, पॉल यहां भी अपने दर्शकों को थोड़ा सा विभाजित करने जा रहा है, जब वे उसे अदालत के सामने ले जाएंगे।

एपिकुरियंस, पद 18। एपिकुरियंस ने कहा कि या तो कोई देवता नहीं है या, अधिक बार, केवल वे देवता जो संवेदना, प्रकृति के माध्यम से जाने जाते हैं। लेकिन आप वास्तव में इन देवताओं से संपर्क नहीं कर सकते।

इसलिए, उन्होंने पुराने मिथकों का विरोध किया, और देवता के मामले में, वे देवतावाद के समान थे, सिवाय इसके कि उन्होंने एक से अधिक देवताओं की अनुमति दी। उनके लिए जीवन का उद्देश्य आनंद था। खैर, हम जानते हैं कि आनंद अच्छा है।

हम इसे अच्छा अनुभव करते हैं. लेकिन आनंद से उनका क्या मतलब था, उनके विरोधियों ने जो कहा था कि आनंद से उनका मतलब था, उसके विपरीत, जैसा कि उनके स्वयं के लेखन प्रमाणित करते हैं, उनका मतलब कामुकता का आनंद नहीं था, बल्कि उनका मतलब शरीर में दर्द की अनुपस्थिति और परेशानी की अनुपस्थिति था। आत्मा में. और इसलिए, उन्होंने मृत्यु को कोई बुरी चीज़ नहीं माना क्योंकि मृत्यु में आपके शरीर में कोई और दर्द या आत्मा में कोई और परेशानी नहीं थी, कम से कम उनके विचार के अनुसार।

वे केवल शिक्षित उच्च वर्गों में ही प्रभावशाली थे। पहली सदी में उनमें कुछ गिरावट आ गई थी, इसलिए वे उतने मजबूत नहीं रहे जितने पहले हुआ करते थे। लेकिन एथेंस में विचारधारा के चार मुख्य विद्यालय थे।

दूसरी शताब्दी में, आपके पास अभी भी एपिक्यूरियन हैं, आपके पास स्टोइक हैं, आपके पास प्लैटोनिस्ट हैं, आपके पास संशयवादी हैं। खैर, वे अरिस्टोटेलियंस, पेरिपेटेटिक स्कूल से संबंधित थे, इसलिए शायद पेरिपेटेटिक्स अधिक महत्वपूर्ण होगा। लेकिन इस बिंदु पर, यह विशेष रूप से एपिक्यूरियन और स्टोइक हैं जिनके साथ पॉल बात कर रहा है।

इस काल में स्टोइक प्लैटोनिस्टों की तुलना में कहीं अधिक लोकप्रिय थे, जो बाद की शताब्दियों में स्टोइक्स की तुलना में अधिक प्रचलन में आए। अध्याय 17 का श्लोक 18, स्टोइक्स। स्टोइक्स ने एपिकुरियंस की आलोचना की, हालाँकि मतभेद उतने महान नहीं थे जितने एक बार थे क्योंकि स्कूलों ने कुछ हद तक एक-दूसरे से उधार लिया था।

सेनेका, एक रोमन स्टोइक जो उस समय जीवित था जब पॉल इस परिषद से पहले था कि वह पहले एथेंस में होगा। सेनेका एपिकुरस की प्रशंसा करता है लेकिन ल्यूसिलियस को एपिक्यूरियनवाद छोड़ने के लिए आमंत्रित करता है। ठीक है, आपके मूल संस्थापक, वह एक अच्छे इंसान थे, लेकिन आपके स्कूल ने इसे तोड़-मरोड़ कर पेश किया है, आपको आना चाहिए और हमारे साथ स्टोइक्स से जुड़ना चाहिए, और वह उनके साथ संवाद करते हैं।

स्टोइक लोगों के बीच एपिकुरियंस की तुलना में अधिक लोकप्रिय थे, जैसे फ़रीसी सदूकियों की तुलना में लोगों के बीच अधिक लोकप्रिय थे, क्योंकि स्टोइक आम लोगों के साथ उनके अधिकांश विश्वासों पर अधिक सहमत थे, कम से कम सार्वजनिक रूप से। उनमें से कुछ अधिक हद तक सनकी लोगों की तरह थे, और हमने इसे जुवेनल और अन्य जगहों पर डायोजनीज लैर्टियस में पढ़ा है। लेकिन स्टोइक्स, ठीक है, हम कुछ क्षणों में स्टोइक्स और स्थापना के बारे में अधिक बात करेंगे, लेकिन सबसे पहले, उन्होंने आनंद को सर्वोच्च आदर्श नहीं माना।

वे सदाचार को सर्वोच्च आदर्श मानते थे। वे सुख को बुराई मानते थे। उनका ब्रह्माण्ड विज्ञान यह था कि दो ताकतें थीं।

वहाँ लोगो, कारण और फ्यूसिस , प्रकृति थी। लोगो प्रकृति पर कार्य करेंगे। तो, आपके पास तर्क का सिद्धांत था जो प्रकृति को उन पैटर्नों में व्यवस्थित करता है जिन्हें हम देखते हैं।

इसीलिए उनमें से कुछ ने कहा, यदि आप प्रकृति को देख सकते हैं और विश्वास नहीं कर सकते कि इसे डिज़ाइन किया गया था, और विश्वास नहीं करते कि कोई सर्वोच्च देवता, लोगो या भाग्य है, तो आपको वास्तव में बहुत अज्ञानी होना चाहिए। स्टोइक्स में समानता की नैतिकता थी जो ईसाई धर्म के समान थी, लेकिन एक बार जब वे प्रतिष्ठान का हिस्सा बन गए तो इसे विकृत कर दिया गया, जो उन्होंने काफी जल्दी किया। दरअसल, दूसरी शताब्दी के अंत में मार्कस ऑरेलियस एक सम्राट हैं जो स्टोइक विचारक हैं।

वे अरस्तू के समय से ही घरेलू संहिताओं पर सख्त थे। घरेलू कोड. अरस्तू के पास ये नियम हैं कि घर के पुरुष मुखिया को अपनी पत्नी, अपने बच्चों और अपने दासों पर कैसे शासन करना चाहिए।

आपने इसे इफिसियों में उठाया और विकसित किया है, लेकिन जो उन्होंने किया उससे बिल्कुल अलग तरीके से, ताकि पति को यह बताने के बजाय कि अपनी पत्नी पर कैसे शासन करना है, पॉल कहता है कि पति को अपनी पत्नी से कैसे प्यार करना चाहिए। पत्नी पति के प्रति समर्पण करती है। वह यह भी कहते हैं कि 5:21 के संदर्भ में, विश्वासी स्वयं को एक दूसरे के प्रति समर्पित करते हैं।

मैं इसके विवरण में नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं अभी यही कर रहा हूं। लेकिन केवल यह कहने के लिए, पॉल अपने लेखन में अक्सर कुछ स्टोइक विचारों का उपयोग करते हैं। रोमन अध्याय 1 में प्रकृति में दैवीय डिजाइन का विचार स्टोइक विचारों के समान है।

इसे यहूदी धर्म के माध्यम से पहले ही अपनाया और अनुकूलित किया जा चुका था, इसलिए वह इसका उपयोग यह कहने में करने में सक्षम था, देखो, आप प्रकृति में भगवान के कार्य को देख सकते हैं। यह वास्तव में कैसे पर कोई स्थिति लेने के लिए नहीं है। आज मेरा मानना है कि हम प्रकृति के बारे में बहुत कुछ जानते हैं और हम कुछ निश्चित रुख अपनाए बिना प्रकृति में ईश्वर की महिमा को और भी अधिक देख सकते हैं।

मुझे नहीं पता कि क्या मुझे इस सब में, इस तरह की चीज़ में पड़ना चाहिए। मुझे जेनेसिस प्रोफेसर को इससे निपटने देना चाहिए। लेकिन वैसे भी, उस डिज़ाइन को कैसे व्यक्त किया जाता है, इस पर कोई विशेष रुख अपनाए बिना, यह कुछ ऐसा है जिस पर पूरे इतिहास में ईसाइयों द्वारा तर्क दिया गया है।

ईश्वर बुद्धिमान है और ईश्वर सृष्टिकर्ता है। इसलिए, विवरण पर कोई रुख अपनाए बिना, कम से कम हम मानते हैं कि भगवान वास्तव में चतुर है और भगवान ने चीजों को वास्तव में अच्छे तरीके से डिजाइन किया है। और स्टोइक्स का मानना था कि आप इसे प्रकृति में देख सकते हैं।

इसलिए, एपिकुरियंस की तुलना में यहूदियों और ईसाइयों के साथ उनकी समानता कुछ अधिक थी। वे प्रोविडेंस में भी विश्वास करते थे। उनका मानना था कि ईश्वरीय प्रकृति संसार में कार्य करती है।

हालाँकि एक समय वे सर्वेश्वरवादी थे, अब वे एक सर्वोच्च देवता के करीब थे। लेकिन उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि ये सभी अन्य देवता भी थे, लेकिन ये देवता समय-समय पर, हर कुछ हज़ार वर्षों में आदिम अग्नि में विलीन हो जाते थे, जब दुनिया अपने आप में ढह जाती थी, एक ब्रह्मांडीय आग में जल जाती थी। लेकिन सर्वोच्च भाग्य या लोगो फिर से दुनिया को पुनर्गठित करेगा।

इसलिए, वे एक चक्रीय ब्रह्मांड में विश्वास करते थे, बिग बैंग-प्रकार के ब्रह्मांड में नहीं। वैसे भी, पॉल को अरियुपगुस में ला रहा हूँ। ख़ैर, एथेंस में दार्शनिक ही पॉल के एकमात्र श्रोता नहीं थे।

हालाँकि एथेंस में बहुत से लोगों को दर्शनशास्त्र का कुछ ज्ञान होगा, एथेंस में बहुत से शिक्षित लोगों को होगा। ये दार्शनिक उसे एरीओपगस में लाते हैं। यह एथेंस का उच्च न्यायालय था।

इसमें लगभग सौ सदस्य थे, इसलिए उसे काफी अच्छे दर्शक वर्ग मिले। साथ ही, वे सार्वजनिक रूप से मिल रहे थे। संभवतः वे अगोरा में स्टोआ बेसिलिकोस में मिल रहे थे।

तो, पॉल को कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं है, उसे शाब्दिक मंगल पहाड़ी पर जाने की ज़रूरत नहीं है। इस अवधि में परिषद को एरियोपैगस कहा जाता था, भले ही वे अब मंगल ग्रह की पहाड़ी, एरीज़ की पहाड़ी पर नहीं मिलते थे। इसलिए, उसे वहां पहुंचने के लिए बहुत दूर नहीं ले जाना पड़ा।

खैर, वे उसे एरीओपगस में क्यों ले जाएंगे? जैसे, अरे, इस आदमी के पास कुछ बहुत अच्छी चीजें हैं। आप लोगों को थोड़ा ब्रेक लेना चाहिए और इसे सुनना चाहिए। खैर, एरियोपैगस एथेंस का उच्च न्यायालय है।

इसलिए संभवत: वे उसे मूल्यांकन के उद्देश्य से वहां ले जा रहे हैं। यदि कोई एथेंस, या किसी प्राचीन शहर में दुकान स्थापित करने और पढ़ाने जा रहा है, यदि आप खुद को वहां एक व्याख्याता के रूप में स्थापित करने जा रहे हैं, और बहुत से लोग आपका अनुसरण करने जा रहे हैं, तो ठीक है, आप शायद चाहेंगे नगर परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त होना। आप पहले एक बड़ी सभा बुला सकते हैं और कह सकते हैं, ठीक है, मैं भाषण देने जा रहा हूँ।

यदि लोगों को आपका व्याख्यान पसंद आया, तो आप एक विद्यालय स्थापित कर सकते हैं। और अगर लोगों को आपका भाषण पसंद नहीं आया, तो आप इसे दूसरे शहर में आज़मा सकते हैं। लेकिन वैसे भी, वे न केवल एक अदालत के रूप में बल्कि शिक्षा बोर्ड की तरह भी काम कर रहे होंगे ताकि यह देखा जा सके कि इस व्यक्ति को बोलने की अनुमति दी जाएगी या नहीं।

इस अवधि में पॉल को वास्तव में फाँसी का खतरा नहीं था, लेकिन यह अभी भी रहस्य पैदा कर सकता है क्योंकि डायस्पोरा में हर कोई, कम से कम शहरी क्षेत्रों में, कम से कम वे लोग जो अधिनियम की पुस्तक का पालन करने के लिए पर्याप्त शिक्षित थे, हर कोई इसके बारे में जानता था सुकरात. और हर कोई जानता था कि सुकरात पर एरिओपैगस से पहले मुकदमा चलाया गया था और उसकी निंदा की गई थी और उसे मार दिया गया था। और इस बिंदु से हर कोई यह भी जानता था कि सुकरात सही था और एरियोपैगस गलत था, जिसमें वर्तमान एरियोपगस में भी हर कोई यह जानता था।

वैसे भी, पॉल उनके सामने बोलता है, और वह एक उपदेश देता है । एक उपदेश या एक प्रोएम आपके भाषण का परिचय था जहां आप दर्शकों को सामान्य रूप से उत्तेजित कर देते थे। आप दर्शकों की प्रशंसा करके शुरुआत करेंगे।

और इसलिए, जब पॉल उनसे कहता है, मैं देखता हूं कि आप कितने धार्मिक हैं, तो कभी-कभी इसका अनुवाद अंधविश्वास के रूप में किया जाता है, शब्द संभावित रूप से अस्पष्ट है, लेकिन वह शायद उनका अपमान करके शुरुआत नहीं कर रहा है। यह शुरुआत करने का अच्छा

तरीका नहीं होगा और उन्हें अपना भाषण ख़त्म नहीं करना पड़ेगा। इसके बजाय, शायद वह उनसे इस तरह से बात कर रहा है कि वे इसे सकारात्मक समझें।

मेरा मतलब है, आप आमतौर पर कहने के लिए कुछ सकारात्मक पा सकते हैं। यदि किसी का धर्म झूठा है, तो आप कम से कम इस तथ्य की सराहना कर सकते हैं कि वे जो मानते हैं उसके प्रति समर्पित हैं, और पॉल ऐसा करता है। हालाँकि, यह शब्द अस्पष्ट है।

इसका मतलब यह नहीं है कि पॉल उनकी बातों की पुष्टि कर रहा है। और ल्यूक के दर्शक, जैसे ही यह सुनेंगे, संभवतः इसे दूसरी तरफ से सुनेंगे। हाँ, यह एक प्रकार का अंधविश्वास है।

लेकिन वह सबसे पहले अपने दर्शकों के साथ एक समान बात ढूंढते हैं। और यह लोगों से जुड़ने का एक अच्छा तरीका है, है ना? वह पद 23 में उनसे अज्ञात ईश्वर के बारे में बात करता है। खैर, ये सभी वेदियाँ अज्ञात देवताओं की थीं।

वह पहले ही एक देख चुका है। तो, वह कहते हैं, मैं आपसे इस अज्ञात भगवान के बारे में बात करना चाहता हूं। और निस्संदेह, वह अज्ञात देवताओं के बारे में बात नहीं करने जा रहा है।

वह अज्ञात ईश्वर के बारे में बात करने जा रहा है क्योंकि वह एक सच्चे ईश्वर के बारे में बात कर रहा है। लेकिन यह कहानी कि कैसे इस अज्ञात भगवान को पहली बार एक अज्ञात भगवान के रूप में पहचाना गया, शायद यहां प्रासंगिक है क्योंकि सदियों पहले, एथेंस में एक प्लेग हुआ था, और उन्होंने उन सभी देवताओं की बलि चढ़ा दी थी जिन्हें वे जानते थे, और उनमें से किसी ने भी काम नहीं किया। लेकिन अंततः, उन्हें एक अज्ञात भगवान को प्रसाद चढ़ाने की सलाह दी गई।

और वे कुछ जानवरों को खुला छोड़ देते थे जहाँ जानवर आराम करने के लिए बैठते थे। आपके पास 1 सैमुअल में ऐसा ही कुछ है। लेकिन जहां भी जानवर आराम करने के लिए बैठते थे, वे वहां अज्ञात देवताओं या अज्ञात देवता की वेदी बनाते थे और वहां उनकी बलि चढ़ाते थे।

ख़ैर, वेदियाँ पॉल के समय में भी खड़ी थीं। और यह वास्तव में प्राचीन भाषणों में सार्वजनिक कार्यों की प्रशंसा करना, स्थानीय स्मारकों की प्रशंसा करना एक विषय था। इसलिए, पॉल अभी भी उनके साथ अच्छे हैं।

वह इस अज्ञात ईश्वर के बारे में बात करने जा रहा है, इस ईश्वर के बारे में जिसके बारे में आप नहीं जानते। ठीक है, यदि आप लोगों को अज्ञानी कहना चाहते हैं, तो कहें कि कुछ ऐसा है जिसके बारे में वे नहीं जानते हैं, अरे नहीं , आप कम से कम इसे अच्छे तरीके से कह सकते हैं, जो पॉल ने किया था। उन्हें यह बताना अच्छा नहीं लगता कि ऐसा कुछ है जो वे नहीं जानते।

लेकिन वे हमेशा नई चीजें सीखना और सुनना चाहते थे। और वास्तव में इसके लिए एथेंस की प्रतिष्ठा थी। तो, वह उन्हें बताने जा रहा है, मैं आपको इस अज्ञात भगवान के बारे में कुछ बताने जा रहा हूं ताकि उसे ज्ञात करने में मदद मिल सके।

17, 24, और 25, वह ईश्वर की आत्मनिर्भरता की बात करता है। मैंने पहले देवताओं के सम्मिश्रण, देवता की ओर एक दार्शनिक प्रवृत्ति के बारे में उल्लेख किया था, ऐसा नहीं था कि वे अन्य देवताओं में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन उनके पास उन्हें आत्मसात करने का एक तरीका था। प्रवासी यहूदी कभी-कभी इस हद तक चले जाते थे कि वे ईश्वर ज़ीउस को सर्वोच्च ईश्वर कह देते थे।

अब, पॉल इतनी दूर तक नहीं गया, और कुछ अन्य प्रवासी यहूदी इतनी दूर तक नहीं गए। लेकिन कुछ लोग पहचान में इतनी दूर तक जाएंगे। मुझे लगता है कि संभवतः एक अच्छा कारण है कि पॉल ने ऐसा क्यों नहीं किया।

लेकिन किसी भी मामले में, स्टोइक्स का मानना था कि ईश्वर ब्रह्मांड में व्याप्त है, या वे कह सकते हैं कि ईश्वर, या लोगो, या भाग्य, वास्तव में ब्रह्मांड है। पहले स्टोइक इस अवधि की तुलना में अधिक सर्वेश्वरवादी थे। और उनका मानना था कि भगवान मंदिरों में बिल्कुल भी स्थानीय नहीं थे।

खैर, पॉल ने भी इस पर विश्वास नहीं किया होगा। मेरा मतलब है, आख़िरकार, उसने स्टीफन को उस पर उपदेश देते हुए सुना था, है ना? स्टीफ़न की शहादत से कुछ अच्छी चीज़ें सामने आईं। आपको हमेशा ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है... कभी-कभी चीज़ें हमें बहुत बुरी लगती हैं।

मेरा मतलब है, यहाँ सुसमाचार का यह महान धर्मशास्त्री आगे बढ़ रहा है, और हम सोचते हैं, उसकी मृत्यु के साथ, यह ख़त्म हो जाएगा, दर्शन ख़त्म हो जाएगा। लेकिन वास्तव में, यह दृष्टि कई गुना बढ़ गई थी क्योंकि चर्च उत्पीड़न के माध्यम से बिखर गया था, क्योंकि लोग उस धर्मशास्त्र के बारे में सोच सकते थे जिसे उन्होंने वास्तव में व्यक्त किया था। और एक बीज बोया गया जो बाद में दमिश्क के रास्ते पर काटा गया क्योंकि जब यीशु दमिश्क के रास्ते पर उसे दिखाई दिया तो पॉल के पास कुछ समझ की सामग्री थी।

उसने स्टीफन का भाषण पहले ही सुन लिया था। उन्हें इस गैर-स्थानीय दृष्टि के बारे में पहले से ही पता था। खैर, यहाँ यह फिर से सतह पर आ गया है।

यशायाह 66:1, परमेश्वर को हाथ से बने मन्दिरों की आवश्यकता नहीं है क्योंकि स्वर्ग उसका सिंहासन है और पृथ्वी उसके चरणों की चौकी है। तो, स्टोइक्स इससे सहमत होंगे। पॉल फिर से आम जमीन स्थापित कर रहा है, और कुछ अन्य विचारक इससे सहमत होंगे।

लेकिन पॉल में बहुत दुस्साहस है क्योंकि जहां भी आपने देखा, हर तरफ, पॉल ने अपने हाथों से इशारा भी किया होगा, भगवान को इन मंदिरों की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने यह भी कहा, अधिक पढ़ें , श्लोक 25 में, भगवान को मानव हाथों से सेवा करने की आवश्यकता नहीं है। यह कुछ ऐसा भी था जो आपने यूनानी दर्शन में पाया था।

भगवान प्रसन्न थे डेस . ग्रीक दर्शन में और डायस्पोरा यहूदी धर्म में भी, अरिस्टियास के पत्र , तीसरे मैकाबीज़, फिलो और अन्य डायस्पोरा यहूदी स्रोतों ने ईश्वर को किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं होने की बात कही। वह स्टोइक्स से सहमत था।

तो फिर, सामान्य आधार। पॉल इस पर विश्वास करता है, बाइबल ने इसे सिखाया है, और वह स्टोइक्स से भी सहमत है। इसलिए, इस साझा आधार का निर्माण करके उन्हें और अधिक कहने का मौका मिलता है।

विवादास्पद बात पर पहुंचने से पहले उन्हें और भी बहुत कुछ सुनना होगा। फिर, यह हमें संदर्भीकरण के महत्व को दिखाता है। हालाँकि संदर्भीकरण का मतलब है कि हम इसे अधिक प्रासंगिक और अधिक समझने योग्य बनाते हैं, हमेशा अधिक स्वीकार्य नहीं, क्योंकि कभी-कभी जब यह अधिक समझने योग्य हो जाता है, तो यह लोगों के लिए अधिक अप्रिय हो जाता है।

वे बेहतर ढंग से समझते हैं कि ईश्वर वास्तव में उनसे क्या चाहता है। छंद 26 से 29 में, वह अभी भी संदर्भ दे रहा है। उन्होंने इस बारे में बात की है कि भगवान को हमसे, मानवता से, बलिदान आदि के संदर्भ में चीजों की आवश्यकता नहीं है।

लेकिन मानवता को ईश्वर की आवश्यकता है, श्लोक 26 से 29 तक। यहूदियों और यूनानियों दोनों ने कुछ मामलों में ईश्वर को निर्माता या देवताओं को निर्माता के रूप में मान्यता दी। उन्होंने यह भी माना कि राष्ट्रों की सीमाएँ दैवीय रूप से स्थापित की गई थीं, हालाँकि वे सीमाएँ समय-समय पर बदलती रहती थीं।

लेकिन उत्पत्ति 10 में सीमाएँ, वहाँ की सूची, अधिनियम 2, छंद 9 से 11, लगभग ल्यूक के समय की भाषा के लिए उत्पत्ति 10 के अद्यतनीकरण की तरह लगती है। लेकिन भगवान ने राष्ट्रों की सीमाओं को विभाजित कर दिया और इतिहास के महाकाव्यों को भी विभाजित कर दिया। स्टोइक्स ने एक चक्रीय ब्रह्मांड की बात की और महाकाव्यों को उस तरह से देखने, खुद को वापस आदिम अग्नि में समाहित करने, समय-समय पर सब कुछ वापस एक में विलीन करने की बात की।

लेकिन यहां यह विचार अधिक हद तक ईश्वर के राष्ट्रों की सीमाओं और इतिहास के महाकाव्यों के प्रभारी होने जैसा है, जैसा कि आपके पास पुराने नियम में है। लेकिन दार्शनिक इससे सहमत होंगे. वह ईश्वर को पिता कहता है।

खैर, यहाँ फिर से, वह संबंधित कर रहा है, वह संदर्भ दे रहा है, वह अपने दर्शकों को पर्याप्त रूप से समझ रहा है कि वे उस भाषा का उपयोग कर सकें जो उनके लिए समझ में आए। वह एक दार्शनिक के रूप में प्रशिक्षित नहीं है, लेकिन कम से कम वह उन तक पहुंच रहा है। यहूदी और यूनानी दोनों परमपिता परमेश्वर को पिता के रूप में बोलते थे।

यहूदियों ने आम तौर पर व्यक्त किया कि वह परमेश्वर के लोगों का पिता, इस्राएल का पिता था। लेकिन यूनानियों और अक्सर प्रवासी यहूदियों ने सृष्टि के आधार पर ईश्वर को विश्व का पिता बताया, या यूनानियों के लिए ज़ीउस सृष्टि के आधार पर विश्व का पिता है। इसलिए, पॉल भाषा का उपयोग इस तरह से कर सकता था जो समझने योग्य हो।

खैर, ईश्वर ब्रह्मांड का निर्माता था। आम तौर पर नए नियम में, वह अपने लोगों का पिता है, हम उसके बच्चे हैं। लेकिन यहां वह इसका उपयोग वैसे ही कर सकता है जैसे आपने एक बार किया था, मुझे लगता है, मलाकी में।

आपके पास यह कभी-कभी अन्य स्थानों पर भी होता है जहां ईश्वर सृष्टि के आधार पर पिता भी है। यह दूसरे का खंडन नहीं कर रहा है, यह सिर्फ एक अलग कोण दे रहा है, अंतरंगता नहीं, लेकिन हमारा अस्तित्व भी उसके प्रति है। श्लोक 28 में, उन्होंने यूनानी कवियों को उद्धृत किया है, हालाँकि ये यूनानी कवियों की काफी प्रसिद्ध पंक्तियाँ थीं, और जैसा कि हम सभी जानते हैं, पॉल ने इन्हें यहूदी क्षमाप्रार्थी मैनुअल से प्राप्त किया होगा।

उन्हें उद्धरणों के संग्रह में एकत्रित किया गया था, इसलिए ग्रीक कहावतों में न्यूनतम प्रशिक्षण भी आपको इस तक कुछ हद तक पहुंच प्रदान कर सकता था। लेकिन ये उद्धरण उपयुक्त रूप से चुने गए हैं। होमर और अन्य कवि, लेकिन होमर सबसे प्रसिद्ध और सबसे अधिक बार उद्धृत किए गए थे, उन्हें प्रमाण ग्रंथों के रूप में उसी तरह उद्धृत किया गया जैसे यहूदी लोग पवित्रशास्त्र का हवाला देते थे।

और पॉल जब आराधनालय में बोल रहा होता है तो वह पवित्रशास्त्र का हवाला देता है, लेकिन वह कवियों का पाठ करता है, हालाँकि उतनी प्रचुरता से नहीं जितना वह पवित्रशास्त्र का हवाला देता है। लेकिन वह होमर का हवाला नहीं देता, वह दिव्य प्लेटो का हवाला नहीं देता, जैसा कि कुछ लोग उसे कहते थे। वह स्पष्ट रूप से एपिमेनाइड्स और अराटस का हवाला देते हैं।

पंक्ति, आप में, हम रहते हैं, और चलते हैं और हमारा अस्तित्व है, एपिमेनाइड्स को जिम्मेदार ठहराया जाता है । खैर, यह दिलचस्प है, टाइटस अध्याय 1 और श्लोक 12, अन्य स्थानों में से एक है, नए नियम में दूसरा स्थान जहां एपिमेनाइड्स उद्धृत किया गया है। एक पत्र में जिसका श्रेय पॉल को दिया गया है, एपिमेनाइड्स क्रेते से था, और यह टाइटस में प्रासंगिक है क्योंकि वह एक क्रेटन कहता है, उनमें से एक।

अब, अगली कहावत में, पहली कहावत, आप में, हम रहते हैं, चलते हैं और हमारा अस्तित्व है, वह एपिमेनाइड्स से है । दरअसल, कहानी के अनुसार, एपिमेनाइड्स ही वह व्यक्ति था जिसने लोगों को अज्ञात देवताओं के लिए इन वेदियों को बनाने की सलाह दी थी। और इसलिए, यह स्वाभाविक है कि उस संदर्भ में, एथेंस में, जब वह अज्ञात भगवान के बारे में बोल रहा है, तो वह एपिमेनाइड्स का हवाला देगा और उम्मीद करेगा कि उसके दर्शक पहचान लेंगे, ओह, यह एपिमेनाइड्स से जुड़ा हुआ है ।

वैसे, एपिमेनाइड्स के बारे में यह भी कहा जाता है कि वह कई वर्षों तक बहुत लंबी झपकी लेता था। तो, यदि आप में से किसी ने वाशिंगटन इरविंग की रिप वैन विंकल के बारे में सुना है और सोचा है कि यह एक मूल अमेरिकी कहानी थी, तो ठीक है, उन्होंने इसे स्वयं लिखा था, लेकिन ग्रीक पौराणिक कथाओं में उनकी कुछ मिसालें थीं, और वास्तव में ऐसी कुछ अन्य कहानियां भी थीं। इतिहास में भी. लेकिन वैसे भी, यह एक काल्पनिक कहानी है।

एपिमेनाइड्स के साथ जुड़ाव समझ में आता है। वह एक और उद्धरण देते हैं. ये एक उद्धरण है, हम भी उनकी संतान हैं.

यह उद्धरण आम तौर पर अराटस को दिया जाता है। अरातुस किलिकिया का रहने वाला था। अच्छा, पॉल कहाँ से था? तो, यह समझ में आता है कि पॉल ने वास्तव में अराटस से कुछ उद्धृत किया होगा।

क्षमायाचना के लिए उपयोगी प्रमाण ग्रंथों के प्रवासी यहूदी संकलनों में कवियों का उपयोग भी दिखाई देता है। इसीलिए मैंने पहले कहा था कि हो सकता है कि उसे इसके लिए इमैनुएल से यह मिला हो। कुछ लोग कवियों को अत्यधिक पौराणिक कहकर आलोचना करते हैं।

दार्शनिकों में यह बात आपके पास बहुत है। स्टोइक्स इसका आरोप लगाते हैं। ख़ैर, ज़ीउस महिलाओं और लड़कों का बलात्कार नहीं कर रहा था।

वह अन्य गुणों आदि के साथ मिला-जुला एक गुण मात्र था। और प्लैटोनिस्टों ने वास्तव में इसे बाद की अवधि में बहुत दूर तक विकसित किया। लेकिन अन्य लोग अपने मामले को साबित करने के लिए कवियों की शब्दावली का बहुत स्वतंत्र रूप से उपयोग करते हैं।

खैर, ध्यान दें कि पॉल अपनी संस्कृति के साथ संपर्क बनाने में बहुत आगे तक जाता है, और मैं जहाँ तक हो सके ऐसा करने की कोशिश करता हूँ। आप में से कुछ लोग इसे कर सकते हैं, ठीक है, निश्चित रूप से आप इसे अपने संदर्भ में मुझसे बेहतर कर सकते हैं। हममें से प्रत्येक को यह देखने की ज़रूरत है कि हम अपने संदर्भ में सुसमाचार को कैसे प्रासंगिक बना सकते हैं और फिर भी इसे प्रासंगिक बना सकते हैं, न कि इससे समझौता किए बिना, न इसे बदलने के लिए, बल्कि इसे उन शब्दों में संप्रेषित करने के लिए जिन्हें लोग समझ सकें, और कुछ सामान्य आधार खोजें।

यह एक अच्छा मिसियोलॉजिकल सिद्धांत है। यह संवाद के लिए एक अच्छा सिद्धांत है. लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने का भी यह एक अच्छा सिद्धांत है।

लेकिन तथ्य यह है कि पॉल कोई भी पक्ष ले रहा है इसका मतलब है कि कुछ लोग उससे सहमत होंगे, कुछ लोग नहीं। एपिकुरियन उनसे सहमत हो सकते हैं, ठीक है, मंदिरों की कोई आवश्यकता नहीं है, और वह क्या कहने जा रहे हैं, मूर्तियों की कोई आवश्यकता नहीं है, लेकिन वे इन सभी बातों पर उनसे सहमत नहीं होंगे जो उन्होंने कही हैं, क्योंकि स्पष्ट रूप से, उनका मानना है एक संभावित ईश्वर में जो इतिहास में कार्य करता है। श्लोक 29, अधिकांश दार्शनिकों ने सोचा कि मूर्तियाँ स्वयं देवता नहीं थीं, लेकिन कुछ ने इन मूर्तियों को आपको देवता की याद दिलाने के लिए, आपको देवता के बारे में सोचने के लिए स्मृति सहायक के रूप में माना।

हमारे पास कलाकृति की ईसाई परंपराएं हैं जो मनुष्यों को चित्रित करती हैं, लेकिन हम मानते हैं कि ईश्वर ईश्वर है। ऐसी कोई तस्वीर नहीं है जिसे हम बना सकें। कुछ परंपराएँ हैं जो आपको ईश्वर की ओर इंगित करने के लिए स्मृति सहायता का उपयोग करती हैं, लेकिन ईसाई यहूदी परंपरा से सहमत हैं कि हमें मूर्तियाँ नहीं रखनी चाहिए।

लेकिन दार्शनिकों ने हमेशा उन्हें मूर्तियों के रूप में नहीं समझा। कभी-कभी वे उन्हें स्मृति सहायक के रूप में देखते थे, जो कुछ ऐसा था जिसे ईसाइयों ने ईश्वर के रूप में भी स्वीकार नहीं किया था, कम से कम उस चीज़ में नहीं जिसका वास्तव में चित्रण करना था कि वह वास्तव में कैसा दिख सकता है, शायद ईश्वर के प्रतीक के विपरीत। 1730, वह उनकी अज्ञानता की बात करते हैं।

परमेश्वर ने उनकी अज्ञानता के कारण अभी तक संसार का न्याय नहीं किया है। खैर, जैसा कि हमने 3:17 में देखा, अज्ञानता दोष को कम कर देती है। यह इसे ख़त्म नहीं करता, बल्कि इसे कम करता है।

कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक दोषी होते हैं। कुछ लोग दूसरों की तुलना में कम दोषी होते हैं, और भगवान इसे ध्यान में रख सकते हैं। गॉस्पेल उस नौकर के बारे में बात करते हैं जो मालिक की इच्छा जानता था, अगर उसने उसकी अवज्ञा की तो उसे कई कोड़े मारे जाएंगे, लेकिन अगर उसे मालिक की इच्छा नहीं पता थी, तो उसे कुछ कोड़े मारे जाएंगे।

किसी भी स्थिति में, 17:23 में अज्ञात ईश्वर की बात की गई। खैर, वह यहाँ जिस अज्ञानता की बात कर रहा है। तो अब वह उन पर इस परमेश्वर को प्रकट कर रहा है जो पहले उनके लिए अज्ञात था।

लेकिन वे नहीं चाहेंगे कि उन्हें अज्ञानी समझा जाए। यहां की भाषा काफी मजबूत है, हालांकि यह और मजबूत होने वाली है। अब, यदि वे सुकरात की तरह बनना चाहते थे, तो सुकरात ने कहा, ठीक है, मैं बहुत अज्ञानी हूँ।

आप जानते हैं, ओरेकल ने कहा था कि मैं सबसे बुद्धिमान व्यक्ति हूँ, लेकिन मैं बहुत अज्ञानी हूँ। मैं यहां बस कुछ सीखने की कोशिश कर रहा हूं। लेकिन उन्होंने पॉल द्वारा उनके ध्यान में यह बात लाने की सराहना नहीं की होगी कि कुछ ऐसा था जिसके बारे में वे वास्तव में नहीं जानते थे जो इतना महत्वपूर्ण था।

लेकिन फिर भी, छंद 30 और 31। यहीं पर पॉल को अंततः सामान्य आधार से परे जाना पड़ता है और उन्हें उस चीज़ के लिए बुलाना पड़ता है जिसके लिए सुसमाचार वास्तव में लोगों को बुलाता है। वह उन्हें पश्चाताप के लिए बुलाता है।

ख़ैर, यह एक ऐसा विचार था जिसकी यहूदी लोग सराहना कर सकते थे, लेकिन यह ऐसा विचार नहीं था जिसे अधिकांश यूनानियों ने सराहा होगा। उन्होंने दर्शन में रूपांतरण के विचार को स्वीकार कर लिया। दार्शनिकों ने किया।

लेकिन संभवतः वह जिस प्रकार के पश्चाताप की बात कर रहे हैं, उन्हें अन्य देवताओं को अस्वीकार करना होगा। और उनके सिस्टम में जो भी चीज़ इससे सहमत नहीं है, उसे अस्वीकार करना होगा, जिसमें वह बात भी शामिल है जिसका वह उल्लेख करने जा रहे हैं क्योंकि एक चीज़

है जिससे समझौता नहीं किया जा सकता है। पॉल का कहना है कि वह दुनिया का न्याय करने जा रहा है।

ठीक है, आप जानते हैं, कई यूनानी लोग मृत्यु के बाद के जीवन में निर्णय में विश्वास करते थे, लेकिन वे किसी भविष्य के समय, ठोस क्षण की आशा नहीं कर रहे थे जब भगवान दुनिया का न्याय करेंगे। यहां तक कि स्टोइक लोगों के लिए भी जो ब्रह्मांडीय विस्फोट में विश्वास करते थे, यह चक्रीय था। वे प्रभु के दिन की तरह कुछ नहीं देख रहे थे, इतिहास का एक रेखीय दृश्य इस समय की ओर बढ़ रहा था जब बड़े पैमाने पर परिवर्तन होगा।

परमेश्वर उस मनुष्य के द्वारा जगत का न्याय करेगा जिसे उसने नियुक्त किया है, और उसने सभी को प्रमाण दिया है। ये अंध विश्वास नहीं है. उसने उसे मृतकों में से जीवित करके प्रमाण दिया है।

नहीं, तभी उसने उन्हें खो दिया। लेकिन वह इससे समझौता नहीं कर सके. यही सुसमाचार है.

पॉल किसी सैद्धांतिक ईश्वर के बारे में बात नहीं कर रहा था जो सिर्फ एक विचार था, प्लैटोनिस्टों का ईश्वर जो भावनाहीन और अप्राप्य था, सिवाय इसके कि वह शुद्ध मन, शुद्ध बुद्धि था, इसलिए आप उसके पास मन के साथ जाएंगे। वह शास्त्र के भगवान के बारे में बात कर रहा था। वह एक ऐसे ईश्वर के बारे में बात कर रहे थे जिसने वास्तविक इतिहास में कार्य किया, एक ऐसा ईश्वर जो लोगों तक पहुंचा, न कि केवल ध्यान के माध्यम से लोगों तक, ईश्वर तक पहुंचने का रास्ता अपनाया, जैसा कि कुछ यूनानी दार्शनिकों ने सोचा था।

इसलिए, वह उसे मृतकों में से जीवित करने की बात करता है। जहां तक यूनानियों का सवाल है, वह कब्र से बाहर आने वाली किसी लाश की तरह होगा। यह कोई बहुत आकर्षक धारणा नहीं थी, या शायद एक दाह संस्कारित शव स्वयं को पुनर्गठित करके वापस आ रहा था।

यहाँ तक कि यह एक प्रकार का डरावना विचार भी था। पॉल आकर्षक हैं, और निश्चित रूप से मरने वाले और उभरने वाले देवताओं को नहीं, जो मर गए और उठे, क्योंकि वे हर साल मौसमी वनस्पति के साथ वापस आते थे। वसंत ऋतु में वे वापस आएँगे, और शुरुआत के लिए यह वास्तव में कोई शारीरिक चीज़ नहीं थी।

लेकिन पॉल पुनरुत्थान की यहूदी धारणा के बारे में बात कर रहा है, दानिय्येल 12:2, और व्यापक रूप से एक आम यहूदी विश्वास के रूप में विकसित हुआ, निश्चित रूप से फरीसियों और यहूदिया में उनके साथ सहमत होने वाले अधिकांश लोगों द्वारा, सदूकियों और कई प्रवासी यहूदियों द्वारा नहीं। इस पर भी विश्वास नहीं हुआ. परन्तु परमेश्वर ने यीशु में यह किया था। परमेश्वर ने यह प्रदर्शित किया था कि यह सत्य है, कि जीवन, पूर्ण जीवन, शारीरिक जीवन है।

जब भगवान ने दुनिया बनाई, तो उन्होंने कहा कि यह अच्छा है। और इनमें से कुछ दार्शनिकों ने सोचा, सबसे अच्छी बात, सोम सेमा , इस शरीर से बाहर निकल जाना है। यह एक कब्र है.

सोम, शरीर, एक समाधि है, एक सेमा है । कई यूनानी विचारकों के विचार अलग-अलग थे, लेकिन कई यूनानी विचारकों ने सोचा कि जब आप शरीर से बाहर होंगे, तो आपकी आत्मा, जो

हल्की थी, इस भारी शरीर से दब नहीं जाएगी। यह अग्नि या वायु से बना एक हल्का तत्व था, और यह शुद्ध आकाश तक तैरता था।

लेकिन बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण के लिए, अस्तित्व शारीरिक अस्तित्व है। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि बीच में कोई पुनर्जन्म नहीं है। लेकिन अस्तित्व शारीरिक अस्तित्व है.

रचना अच्छी है. सृष्टि का नवीनीकरण होगा. नवीकृत सृष्टि होगी, और शरीर पुनर्जीवित होगा, और हमें शारीरिक अस्तित्व में आनंद मिलेगा।

1 कुरिन्थियों 15, 2 कुरिन्थियों 5, हमारे पास अब जैसा शरीर नहीं है। मेरा मतलब है, जाहिर है, मतभेद हैं, जैसे यीशु के पुनरुत्थान वाले शरीर के साथ मतभेद थे। लेकिन यह शारीरिक है.

दुनिया एक वास्तविक जगह है. दुनिया मायने रखती है. तभी तो हम पर्यावरण की परवाह कर सकते हैं।

हम भूखे रह रहे लोगों की परवाह कर सकते हैं। हम लोगों के बीमार होने की परवाह कर सकते हैं। यह एक वास्तविक दुनिया है.

और बुराई और पीड़ा हमारी कल्पना नहीं है, जैसा कि कुछ विश्वदृष्टिकोणों में होता है। यह कुछ ऐसा है जिसकी भगवान को परवाह है, और हम इसकी परवाह कर सकते हैं। और एक समय आ रहा है जब यह सब ठीक हो जाएगा।

यह यूनानी विचारधारा के अनुकूल नहीं था। यह एपिक्यूरियन विचारधारा के अनुकूल नहीं था। यह स्टोइक के विचार के अनुरूप भी नहीं था।

पॉल इसे अंत के लिए क्यों बचाकर रखता है? खैर, क्योंकि जब भी वह यह कहता है, वह अंत है। वे बाकी समय उसकी बात सुनने वाले नहीं हैं। पॉल इन्हें पूरी तरह से क्यों नहीं छोड़ सकता? क्योंकि अगर वह उन्हें पूरी तरह से छोड़ देता है, तो ठीक है, हम आम जमीन की तलाश कर रहे हैं, लेकिन वह सुसमाचार का प्रचार नहीं कर रहा है।

कई वर्ष पहले मेरा एक मित्र था, और उसके विश्वास में, यीशु एक महान भविष्यवक्ता, एक महान शिक्षक थे। खैर, शुरुआत करने के लिए हमारे पास बहुत सी सामान्य बातें थीं। वह एक सच्चे ईश्वर में विश्वास करता है।

खैर, शुरुआत करने के लिए बहुत सारी ज़मीन है। हमारे बीच बहुत सारी समानताएं हैं। मैंने कहा, ठीक है, यीशु भी परमेश्वर का वचन है।

उन्होंने कहा, ओह, ओह, हम ऐसा मानते हैं। अपनी परंपरा में वे ऐसा मानते हैं. बहुत सारी समानताएं थीं।

मैंने कहा, और हम मृतकों में से पुनरुत्थान में विश्वास करते हैं, मृतकों में से पुनरुत्थान का वादा किया गया है। हाँ, हम उस पर विश्वास करते हैं। मैंने कहा, और हम मानते हैं कि यीशु वास्तव में मृतकों में से जीवित हो गये थे।

खैर, नहीं, उनकी परंपरा में, वे विश्वास नहीं करते थे कि यीशु मर गये। लेकिन हमारे पास काम करने के लिए बहुत सारे समान आधार हैं। वह कुंवारी जन्म में विश्वास करते थे, चमत्कारों में विश्वास करते थे।

यदि सामान्य आधार है, तो हर तरह से। मेरा मतलब है, पॉल को यहां काम करने की तुलना में वहां अधिक सामान्य आधार था। इसलिए, जब आपको सामान्य आधार मिल जाए, तो इसका उपयोग करें।

और विनम्र बनो और दयालु बनो. लेकिन फिर भी, लोगों को उन अन्य चीज़ों को भी जानने की ज़रूरत है जिन पर हम विश्वास करते हैं, जो हमारे विश्वास के केंद्र में हैं। परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जीवित किया।

और यही अनन्त जीवन की हमारी आशा है। श्लोक 32 से 34. एथेंस में पॉल के परिणाम क्या हैं? कुछ लोग कहते हैं, ओह, आप जानते हैं, वह इसके बाद कोरिंथ चला गया।

1 कुरिन्थियों, वह कहता है, जब मैं एथेंस में रहने के बाद कुरिन्थ में तुम्हारे पास आया, तो मैंने ठान लिया, कि जब मैं तुम्हारे पास आया, तो यीशु मसीह और क्रूस पर चढ़ाए गए उसके अलावा कुछ भी नहीं जानता था। और मैं निर्बलता, भय, और बहुत कांपते हुए तुम्हारे साथ था। ठीक है, वे कहते हैं, ठीक है, पॉल ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि एथेंस में यह बहुत बुरी तरह से हुआ था, जहां वह क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहा था।

आप जानते हैं, वास्तव में, यह कहकर अपेक्षाओं को कम करने का एक सामान्य अलंकारिक उपकरण था कि आप कितने बुरे वक्ता थे। डियो क्राइसोस्टॉम, डियो दूसरी सदी की शुरुआत में सुनहरे मुंह वाले वक्ता थे, अक्सर अपने भाषणों में ऐसा करते थे। वह कहता, तुम्हें पता है, मैं बहुत अच्छा वक्ता नहीं हूं।

और फिर वह उसे इस वाक्पटुता से उड़ा देगा। अब, पॉल, यदि आप उसके पत्र पढ़ते हैं और आप प्राचीन शब्दावली का अध्ययन करते हैं, तो पॉल बहुत अच्छा था। मेरा मतलब है, अधिकांश बयानबाज़ों ने अपने पत्रों में बयानबाजी को शामिल ही नहीं किया।

लेकिन फिर, वे तर्क-वितर्क नहीं कर रहे थे। लेकिन आपके पास पॉल के पत्रों में कम से कम कई सूक्ष्म-बयानबाजी उपकरण हैं जो अक्षरों में होने के मामले में प्राचीन बयानबाजी के मानकों से असामान्य हैं। और फिर भी, उसी समय, हमने पॉल के पत्रों से भी पढ़ा, वास्तव में, लोगों ने नहीं सोचा था कि वह एक अच्छा वक्ता था।

2 कुरिन्थियों 10, 2 कुरिन्थियों 11. लेकिन ऐसा लगता है कि यह उसके तर्क की प्रकृति या उसके तर्क की प्रकृति नहीं रही है। ऐसी अन्य चीज़ें भी थीं जो यह निर्धारित करती थीं कि कोई व्यक्ति अच्छा वक्ता है या नहीं।

उन्होंने कैसे कपड़े पहने, उन्होंने खुद को कैसे संवारा, उनके हाव-भाव। और शायद पॉल के मामले में और भी अधिक प्रासंगिक, या शायद पॉल के मामले में प्रासंगिक एकमात्र चीज़, शायद उनका उच्चारण। पॉल एथेंस से नहीं था.

वह कोरिंथ से नहीं था. उसके पास शायद शुद्ध एटिक उच्चारण नहीं था, हालाँकि ऐसा लगता है कि उसने इसे बेहतर ढंग से विकसित किया है क्योंकि जब वह ग्रीक बोलना शुरू करता है, तो अधिनियमों के अध्याय 21 में किलियार्क कहता है, हे, तो क्या आप मिस्र के लोग नहीं हैं जो लोगों को जंगल में ले गए? खैर, मिस्र में बहुत सारे लोग ग्रीक बोलते थे। मिस्र में यहूदी लोग निश्चित रूप से ग्रीक भाषा बोलते थे।

लेकिन वे उस तरह से ग्रीक भाषा नहीं बोलते थे जिस तरह से एजियन लोग बोलते थे, खासकर एथेंस या कोरिंथ जैसी जगहों से। और ऐसा होता है कि यह किलिआर्क स्वयं ग्रीक है। उसका नाम लिसियास है।

इसलिए वह पॉल की ग्रीक भाषा की गुणवत्ता से प्रभावित है। इतना नहीं कि वह बिल्कुल भी ग्रीक बोल सके, लेकिन इसकी गुणवत्ता। तो, किसी भी मामले में, पॉल दुनिया का सर्वश्रेष्ठ वक्ता नहीं था।

लेकिन जब वह कहता है कि मैं मसीह के अलावा आपके बीच कुछ भी प्रचार नहीं करने के लिए दृढ़ हूं और मुझे क्रूस पर चढ़ाया गया है, तो यह कुरिन्थियों पर उसके जोर के कारण है जो सभी सत्ता, सांसारिक स्थिति और शक्ति इत्यादि में हैं। पॉल उन्हें क्रूस की याद दिला रहा है. वह ऐसा प्रथम और द्वितीय कुरिन्थियों दोनों में करता है।

लेकिन हाँ, पॉल ने क्रूस का प्रचार किया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने संदर्भ नहीं दिया। वह इसे कुरिन्थियों के साथ पत्रों के माध्यम से करता है।

यहां तक कि उन लोगों के साथ भी अलंकारिक उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है जो उनकी बयानबाजी की आलोचना कर रहे हैं। एथेंस में पॉल के परिणाम क्या हैं? ल्यूक हमें बताते हैं कि वहां धर्म परिवर्तन करने वालों में से एक स्वयं एरियोपैगाइट था। खैर, एरियोपैगस में लगभग सौ सदस्य थे, लेकिन फिर भी, वहां अपने संक्षिप्त उपदेश में, उन्होंने एक नगर परिषद सदस्य जीता है।

यह पवित्र आत्मा का कार्य होना चाहिए। यदि आप नगर परिषद सदस्य हैं तो नगर परिषद सदस्यों के खिलाफ कुछ भी नहीं। लेकिन इस एक उपदेश में, ऐसे लोगों से, जो वह जो संवाद कर रहा था उससे सांस्कृतिक रूप से बहुत भिन्न थे, कहने मात्र से उनमें से एक आस्तिक बन गया।

पवित्र आत्मा ने अवश्य ही उस व्यक्ति को स्पर्श किया होगा। उसका नाम डायोनिसियस है और बाद की परंपरा के अनुसार वह एथेंस का पहला बिशप बना। डेमरस।

यह महिला वहां क्यों है? विशेष रूप से एथेंस के बारे में हम जो जानते हैं, उसे देखते हुए वह संभवतः नगर परिषद की सदस्य नहीं थी। लेकिन वह शायद स्टोइक या एपिक्यूरियन दार्शनिकों में से एक रही होगी क्योंकि कुछ दार्शनिकों के पास महिला शिष्याएँ थीं। साथ ही, वहां भीड़ भी जमा हो सकती है।

लेकिन एथेंस में, परंपरागत रूप से, वह उन स्थानों में से एक था जहां महिलाओं पर सबसे अधिक प्रतिबंध था। तो शायद वह एक उच्चवर्गीय महिला है। पारंपरिक एथेंस में, आम तौर पर, सार्वजनिक रूप से उच्च वर्ग की एकमात्र महिलाएँ उच्च वर्ग की वेश्याएँ, हेटेरी होती थीं ।

लेकिन वह एक दार्शनिक हो सकती थी, खासकर उन लोगों को देखते हुए जिनके बीच पॉल बोल रहा था, जब वह यह संदेश दे रहा था तो कौन वहां मौजूद था। अब ये शायद बुरा नहीं बल्कि अच्छा लगने लगा है. मेरा मतलब है, उनमें से कुछ ने उसका मज़ाक उड़ाया।

उनमें से कुछ ने कहा, ठीक है, हम किसी अवसर पर आपसे और अधिक सुनेंगे। लेकिन याद रखें, अन्यत्र विभाजित प्रतिक्रियाएँ थीं, जैसे अधिनियम अध्याय 14 में। अक्सर अधिनियमों में विभाजित प्रतिक्रियाएँ होती हैं।

यह सुसमाचार की समस्या नहीं है, और यह कोई बुरी बात नहीं है, क्योंकि कुछ लोग विश्वासी बन गये थे, और यहाँ भी यही होता है। अब, इसके बाद, पॉल आगे दक्षिण में अगले शहर की ओर बढ़ता है, और वह शहर कोरिंथ है। वह अधिनियम 18 होगा।

मैं सभी अधिनियमों को समान विवरण में नहीं करने जा रहा हूँ, लेकिन मैं अखाया की राजधानी कोरिंथ पर कुछ विवरण देने जा रहा हूँ, क्योंकि मैं अधिनियमों के कुछ खंडों को बहुत विस्तार से चित्रित करना चाहता हूँ ताकि आप देख सकें कि यह कैसा है यदि आप विस्तृत विवरण में जाना चाहते हैं तो हो चुका है, और फिर जैसे-जैसे हम उससे आगे बढ़ेंगे, मैं अन्य भागों का सारांश प्रस्तुत करूँगा। यदि आप वास्तव में बड़े पैमाने पर विवरण चाहते हैं, तो मेरे पास मेरे चार-खंड अधिनियम टिप्पणी में बड़े पैमाने पर विवरण हैं, लेकिन अधिकांश लोग ऐसा नहीं चाहेंगे। अधिकांश लोगों की उस तक पहुंच नहीं होगी।

इसे सौ पेज के सारांश में संक्षेपित किया गया है। पृष्ठभूमि सामग्री, जो आपको प्राचीन स्रोतों को पढ़े बिना अपने आप नहीं मिलेगी, मेरी पृष्ठभूमि टिप्पणी में संक्षेपित है, संशोधित संस्करण जो 2014 में आया था। इसे अध्ययन नोट्स में और भी अधिक सारांश फैशन में संक्षेपित किया गया है सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अध्ययन बाइबिल जो ज़ोंडरवन द्वारा प्रकाशित की जा रही है, जहां मैंने एक्ट्स और बाकी न्यू टेस्टामेंट पर नोट्स लिखे, या, ठीक है, न्यू टेस्टामेंट के अधिकांश नोट्स, बिल्कुल सब कुछ नहीं।

और साथ ही, अधिकांश टिप्पणियों में कुछ पृष्ठभूमि सामग्री होती है। इसलिए, यदि आप विवरण चाहते हैं तो यह वहां मौजूद है, लेकिन मैं केवल यह स्पष्ट करने जा रहा हूं कि यदि आप चाहें तो

आप वास्तव में पृष्ठभूमि पर बहुत अधिक विवरण में जा सकते हैं। और जब हम अधिनियम अध्याय 18 की शुरुआत में जाते हैं, तो मैं इसका उदाहरण देने जा रहा हूं, जो 1 कुरिन्थियों के लिए कुछ अच्छी पृष्ठभूमि भी प्रदान करता है।

फिर से, बहुत सारी कुरिन्थियों की टिप्पणियाँ और अन्य अध्ययन। मेरे पास कोरिंथ पर शोध प्रबंध करने वाले छात्र हैं, और मैं वास्तव में उनमें से कुछ को ऐसा करने से हतोत्साहित करने की कोशिश करता हूं क्योंकि कोरिंथ पर बहुत सारे शोध प्रबंध लिखे जा रहे हैं, लेकिन कोरिंथ से बहुत सारे पुरातात्विक साक्ष्य, वॉल्यूम और कोरिंथ से प्रकाशित शिलालेखों की मात्राएं हैं। तो, बहुत कुछ है जो हम जानते हैं, और मैं आपको अगले पाठ में इसका एक नमूना देने जा रहा हूँ।

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह अधिनियम 17 पर सत्र 18 है।